**EDUZONE: International Peer Reviewed/Refereed Multidisciplinary Journal (EIPRMJ), ISSN: 2319-5045**
**Volume 12, Issue 1, January-June, 2023, Available online at: www.eduzonejournal.com**

# महिला सशक्तिकरण में कौशल विकास की भूमिका

डॉ० पुष्पांजलि पाल[1], मनोज कुमार[2]

[1]सहायक आचार्य एवं विभागाध्यक्ष, समाजकार्य विभाग, नेहरु ग्राम भारती मानित विश्वविद्यालय, प्रयागराज
[2]शोध छात्र, समाजकार्य विभाग, नेहरु ग्राम भारती मानित विश्वविद्यालय, प्रयागराज
संवादी लेखक: मनोज कुमार, ई मेल: kumarmanojmsw007@gmail.com

**सारांश:**

सशक्तिकरण एक प्रक्रिया है जिसके माध्यम से जागरूकता कार्यशीलता, बेहतर नियंत्रण के लिए प्रयास के द्वारा व्यक्ति अपने विषय में निर्णय लेने के लिए समर्थ एवं स्वतंत्र होता है. इस दृष्टि से देखे तो नारी का सशक्तिकरण एक सर्वांगीण व बहुआयामी दृष्टीकोण है. यह राष्ट्र निर्माण की मुख्यधारा में महिलाओं की प्रयास व सक्रिय भागीदारी में विश्वास रखता है, एक देश के तीव्र आर्थिक विकास के लिए महिलाओं को सशक्त बनाना अति आवश्यक है. महिलाओं के सन्दर्भ में कौशलपूर्ण बनाने का अर्थ महिलाओं को रोजगार प्रदान करना ही नहीं होना चाहिए बल्कि उनके द्वारा प्राप्त कौशलों में गुणात्मक सुधार कर उनके कार्य प्रदर्शन को बेहतर तथा उत्पादक बनाना है कौशल विकास महिलाओं के लिए रोजगार तो सुनिश्चित करता ही है साथ ही साथ उनकी आर्थिक स्थिति को भी सशक्त करता है. भारत जैसे विकासशील देश में जहाँ कार्य शक्ति में महिलाओं की भागीदारी की निम्न दर एवं लैंगिक असमानता जैसी समस्यायें वर्तमान में भी विद्यमान है एवं एक चिंता का विषय है. महिलाओं को कौशलपूर्ण एवं उन्हें सशक्त बना कर इस समस्या का समाधान निकाला जा सकता है.

इस शोध पत्र के द्वारा कौशल विकास एवं महिलाओं के सशक्तिकरण के पारस्परिक सम्बन्धों एवं कौशल विकास की आवश्यकता को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है.

**कूट शब्द** – कौशल विकास, महिला सशक्तिकरण, आर्थिक विकास, समावेशी विकास, रोजगार.

**परिचय -**

किसी भी देश के सामाजिक एवं आर्थिक विकास में महिलाओं की भूमिका आति महत्वपूर्ण होती है एवं पिछले कुछ दशकों से महिलाओं की कार्यस्थल से जुड़ी भूमिका में काफी परिवर्तन हमें देखने को मिल रहा है लेकिन आज भी हमे कार्यस्थल पर महिलाओं से भेदभाव, मजदूरी दर में भिन्नता, निम्न महिला भागीदारी,महत्वपूर्ण भूमिका न देना आदि समस्यायें देखने को मिलती है. कार्य स्थलों पर अधिकांश महिलाएं कार्य से जुड़े कौशलों में पूर्ण रूप से प्रशिक्षित नहीं है एवं अकुशल है, यही कारण भी है कि महिलाएं अपने अधिकारों को लेकर संगठित नहीं हो पाती है.

महिलाओं की श्रमिक सहभागिता दर 1990 में 35 प्रतिशत थी, जो साल 2018 में गिरकर 27 प्रतिशत रह गयी, ग्लोबल इकनॉमिक फोरम द्वारा जारी ग्लोबल जेंडर गैप रिपोर्ट 2021 में 156 देशों की सूची में भारत 140वें स्थान पर है, इस रिपोर्ट के अनुसार महिलाओं की आर्थिक भागीदारी और अवसर में बहुत तेजी से गिरावट हुई है महिला श्रमबल भागीदारी दर 24.8 प्रतिशत से गिर कर 22.3 प्रतिशत रह गयी है , वरिष्ट एवं प्रबंधक पदों पर केवल 14.6 प्रतिशत महिलाएं है केवल 8.9 प्रतिशत कम्पनियाँ ही ऐसी है जहाँ शीर्ष प्रबंधक पदों पर महिलाएं अपना योगदान दे रही है.

इस स्थिति के लिए सामाजिक एवं आर्थिक दोनों कारण जिम्मेदार है. महिलाओं की स्थिति में सुधर अवश्य होगा परन्तु इसके लिए उनकी कार्य उत्पादकता में सुधार आवश्यक है. महिलाओं से जुड़ी समस्याएं जैसे लैंगिक भेदभाव, लैंगिक आधार पर

वेतन में विसंगतियां,लैंगिक आधार पर पदों का बटवारा तभी दूर हो पाएंगी जब महिलाओं के कौशल विकास की दिशा में सकारात्मक प्रयास किये जायेंगे.

कौशल विकास एवं महिला सशक्तिकरण- किसी भी समाज एवं देश के विकास एवं वृद्धि के लिए उस समाज एवं देश की महिलाओं का शिक्षित एवं कौशलपूर्ण होना बहुत ही आवश्यक है एक महिला के शिक्षित होने से दो परिवार शिक्षित होते हैं एवं एक महिला के कौशलपूर्ण होने से सामाजिक परिवर्तन होता है, जब समाज में शिक्षा का अभाव था तो महिलाओं को केवल घर के कामों के लिए ही उपयुक्त माना जाता था और उन्हें घर तक ही सीमित रखा जाता था लेकिन समाज में शिक्षा के विस्तार से समाज में महिलाओं के प्रति सोच बदली है और अब महिलाएं घर व बाहर दोनों जगह अपनी भूमिका बखूबी निभाने का प्रयत्न कर रही है. परन्तु इतना कुछ होने के बाद यह भी सत्य है की समाज में महिलाएं अभी भी सबसे ज्यादा अशिक्षित एवं अकुशल है.

अतः कौशल विकास के माध्यम से ही हम महिलाओं के सशक्तिकरण के लक्ष्य को प्राप्त कर सकते है यह उनकी कार्य भागीदारी में उत्पादकता एवं कुशलता में वृद्धि करेगा. आज के समय की मांग है कि महिलाएं निम्न कौशलों को अवश्य प्राप्त करें.

- संचार कौशल
- नेतृत्व कौशल
- निर्णय शक्ति कौशल
- समय प्रबंधन कौशल
- सामूहिक संघ कार्य कौशल
- रचनात्मकता कौशल
- लोच शीलता एवं अनुकूलनशीलता कौशल
- समस्या निवारण कौशल
- व्यक्तित्व विकास कौशल
- प्रबंधन कौशल
- लेखांकन कौशल
- कम्प्यूटर कौशल
- आचार नीति कौशल
- व्यवहारिकता कौशल

**समस्यायें** -

कौशल विकास के द्वारा महिलाओं को सशक्त बनाने के मार्ग में समस्यायें भी कम नहीं हैं, कुछ समस्यायें हम यहाँ देख सकते हैं-

- सामाजिक समस्या
- आर्थिक समस्या
- प्रशिक्षण समस्या

हमारे सामाजिक रूप से इतने विकसित हो जाने के बावजूद भी हम आज भी एक पुरुष प्रधान समाज के रूप में जाने जाते है और यही पुरुषवादी सोच हमारे सोच का हिस्सा बन गयी है बस यही सोच से हम ऊपर नहीं उठ पा रहे है और इसी के कारण समाज में आज भी महिलाओं को पुरुषों के सामान स्थान, अच्छा स्वास्थ्य ,शिक्षा नहीं मिल पा रहे हैं जो की चिंता का विषय आज भी बने हुए हैं , ग्रामीण क्षेत्रों में यह स्थिति और भी दयनीय है, ऐसे में महिलाओं के कौशल विकास एवं व्यावसायिक शिक्षा का लक्ष्य अत्यंत कठिन है.सरकार प्रयास अवश्य करती है परन्तु अपने द्वारा चलाये जा रहे कौशल विकास कार्यक्रमों का मूल्यांकन सही से नहीं कर पाती है. वे महिलायें जो

ग्रामीण क्षेत्रों में रहती हैं उन्हे प्रशिक्षण देना तो और भी कठिन कार्य है क्योंकि अशिक्षा एवं गरीबी बाधा बन कर बीच में खड़े हो जाते है ऐसा नहीं है कि सरकारी व गैरसरकारी प्रयास नहीं हो रहे है परन्तु अभी भी सफलता दर काफी कम ही है.

**सुझाव** -

- बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएँ
- महिला व्यवसायिक तथा तकनीकी शिक्षा को प्रोत्साहन
- लैंगिक संवेदनशीलता
- प्रशिक्षण केन्द्रों का विस्तार
- वित्तप्रबंधन
- महिला उद्यमिता का विकास
- डिजिटल प्लेटफार्मों का विस्तार
- रोजगार अवसरों में वृद्धि
- स्वरोजगार को प्रोत्साहन

यह सत्य है कि सशक्त महिला वही है जो आर्थिक रूप से समृद्ध है महिला आर्थिक रूप से तभी समृद्ध होगी जब शिक्षित होगी, प्रशिक्षित होगी, तथा कौशल विकास होगा. इसके लिए गाँव तथा शहर के स्कूलों के पाठ्यक्रमों में प्रारंभ से ही कौशल ज्ञान को प्रोत्साहन मिलना चाहिए. ऐसी शिक्षा जो रोजगार दिलाये, कौशल निर्माण को बढ़ावा दे बच्चों को विशेष रूप से बालिकाओं को प्रदान करनी चाहिए. यही बालिकाएं भविष्य में सशक्त होंगी न केवल आर्थिक रूप से बल्कि सामाजिक प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी. कौशल ज्ञान पर महिलाओं का भी पुरुषों के सामान अधिकार है.

- दीन दयाल उपाध्याय ग्राम कौशल योजना
- राष्ट्रीय कौशल विकास एजेंसी
- राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन
- प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना
- उड़ान कार्यक्रम (कौशल विकास मंत्रालय)
- राष्ट्रीय कौशल विकास निगम
- कौशल विकास और उद्यमिता मंत्रालय

अतः सरकार बड़े स्तर पर कौशल विकास को प्रोत्साहन दे रही है. सरकार का यह प्रयास है कि महिलाएं अधिक से अधिक इन योजनाओं तथा स्कीम का लाभ उठा सकें. सरकार के कार्यक्रम जैसे – मेक इन इंडिया, स्टैंड अप इंडिया, स्टार्ट अप इंडिया का उद्देश्य रोजगार सृजन करके कौशल विकास करना रहा है, ताकि महिला सशक्त हो, और देश के आर्थिक विकास में अपना योगदान दे सके . सरकारी प्रयास तथा कार्यक्रम जैसे मेक इन इंडिया आदि में महिला उद्यमियों की भागीदारी बहुत संतोषजनक रही है.

**निष्कर्ष** -

महिला तभी सशक्त होगी जब वह शैक्षिक एवं आर्थिक रूप से प्रगति की ओर अग्रसर हो आज महिलाओं को केवल शिक्षित कर देना ही उनका सशक्तिकरण करना नहीं है वर्तमान समय में महिलाओं को अच्छी शिक्षा के साथ रोजगार परक प्रशिक्षण प्रदान करना भी उनको सशक्त करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है

- अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर यदि तुलना करें तो भारतीय महिलाओं की भागीदारी और कौशल निर्माण एवं विकास बहुत संतोषजनक नहीं है, लेकिन कौशल विकास के नये कार्यक्रम, सरकार तथा निजी क्षेत्र की कौशल निर्माण में भागीदारी, अनुसंधान तथा विकास कार्यक्रम, वित्तीय समावेश आदि महिला सशक्तिकरण की दिशा में सकारात्मक योगदान देंगे.
- कौशल भारत कार्यक्रम के अंतर्गत 35 लाख महिलाओं को कौशल प्रदान किया गया जो वर्तमान में नए भारत के निर्माण में सकरात्मक योगदान दे रहीं हैं.

**सन्दर्भ -**

[1]. https://www.amarujala.com/columns/opinion/labor-participation-rate-declining-womens-share-in-the-workforce

[2]. किशोर ,एस एवं गुप्ता, के. "भारत में लैंगिक समानता तथा महिला सशक्तिकरण"

[3]. https://www.mpgkpdf.com/2022/02/women-empowerment-in-hindi.html

[4]. ग्लोबल इकनॉमिक फोरम द्वारा जारी ग्लोबल जेंडर गैप रिपोर्ट 2021

[5]. https://www.upsdm.gov.in/Home/SuccessStory

[6]. http://www.pmkvyofficial.org/

[7]. https://nsdcindia.org/pmkk